आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : ग्यारहवां | मार्च – 2017

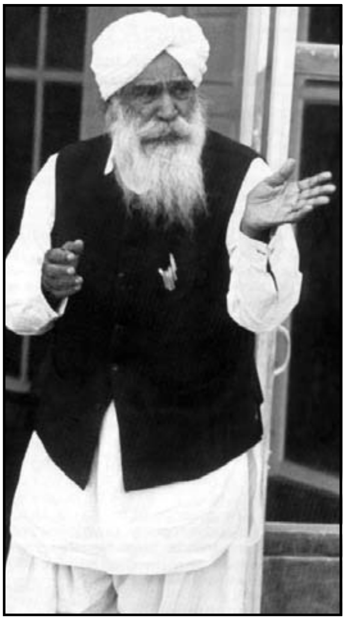

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सानूं भुल्लयां नू रस्ते पाया 5

(सन्त दादू दयाल जी की बानी)

पोटर वैली

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब 19

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा विदाई के समय दिया संदेश

लगातार गुरु की याद 29

मुम्बई

जब महाराज कृपाल ने मुझे नामदान देने का हुक्म दिया 31

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

उप संपादक–नन्दनी

सहयोग–परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com	Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2017 –180– मूल्य – पाँच रुपये

मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए आवश्यक सूचना

गुरु प्यारी साध संगत,

बाबा जी की अपार दया से सन् 2003 से हिन्दी मासिक पत्रिका **अजायब बानी** का प्रकाशन हो रहा है, जिससे हम सब लाभ उठा रहे हैं।

जो प्रेमी यह पत्रिका डाक द्वारा प्राप्त कर रहे हैं उनसे प्रार्थना की जाती है कि वे सूचित करेंगे कि उन्हें पत्रिका हर माह समय पर मिल रही है, उनका पता ठीक है? आप यह सूचना इस तरह दे सकते हैं:

1. आप फोन न.– 99 50 55 66 71 पर बात करके सूचित कर सकते हैं या whatsapp कर सकते हैं।

2. आप फोन न.– 98 71 50 19 99 पर sms कर सकते हैं।

3 आप dhanajaibs@gmail.com पर mail कर सकते हैं।

4 आप सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला श्री गंगानगर(राजस्थान) पर पत्र लिखकर भी सूचित कर सकते हैं।

सूचित करते समय कृपया अपना SN# अवश्य बताएं। आपका SN# लिफाफे के दाँई तरफ लिखा हुआ है। यह पत्रिका हर माह की एक तारीख को श्री गंगानगर से डाक द्वारा भेजी जाती है।

अगर आपकी तरफ से कोई सूचना नहीं मिलती तो यह समझा जाएगा कि आपको डाक प्राप्त नहीं हो रही। डाक जारी रखने के लिए आवश्यक है कि आप सूचित करें।

धन्यवाद

आपके आभारी

प्रेम प्रकाश छाबड़ा

फोन – 99 50 55 66 71

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया

दादू दयाल जी की बानी DVD-520 पोटर वैली

सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया, धन कृपाल गुरु जी,

1. जप–तप कीते धूणे तपाऐ, जल धारे करके तीर्थ न्हाऐ,
   औजड़ जांदेयां नूं रस्ते पाया, धन कृपाल गुरु जी .....

2. कर्मकांड सब कर–कर हारे, भेष वटाऐ न्यारे–न्यारे,
   तैथों बिना किसे दुःख ना वंडाया, धन कृपाल गुरु जी .....

3. कोई ना जग विच रेहा सहारा, कित्थों लब्भ जाऐ प्रीतम प्यारा,
   आखिर तरस पीया नूं आया, धन कृपाल गुरु जी .....

4. अंदर जावां बाहर आवां, नूर इलाही देखना चाहवां,
   भाग तत्तड़ी दे घर नूं लाया, धन कृपाल गुरु जी .....

5. बिरहों दा दुःखड़ा वड–वड खावे, 'अजायब' दी कोई पेश ना जावे,
   वैद्य बण कृपाल घर आया, धन कृपाल गुरु जी .....

इस शब्द की हर लाईन मेरी जिंदगी के साथ ताल्लुक रखती है। जब हमारे अंदर से विरह की पुकारें निकलती हैं, तब विरह की तड़प वाले के आगे आप संसार की कोई भी वस्तु रख दें वह उस पर खुश नहीं होता। जिस तरह जब बच्चा माता के प्यार के लिए रोता है उस समय आप बच्चे के आगे जितने मर्जी खिलौनें रख दें चाहे जितनी अच्छी चीजें रख दें लेकिन वह माता के बिना सब्र नहीं करता।

जब आत्मा के अंदर परमात्मा के लिए तड़प पैदा हो जाती है तब, जब तक आत्मा को परमात्मा नहीं मिलता यह आत्मा सब्र नहीं करती। अगर हमारी आत्मा की पुकार, विरह और तड़प सच्ची है तो वह बिना बुलाए ही हमारे पास आ जाता है।

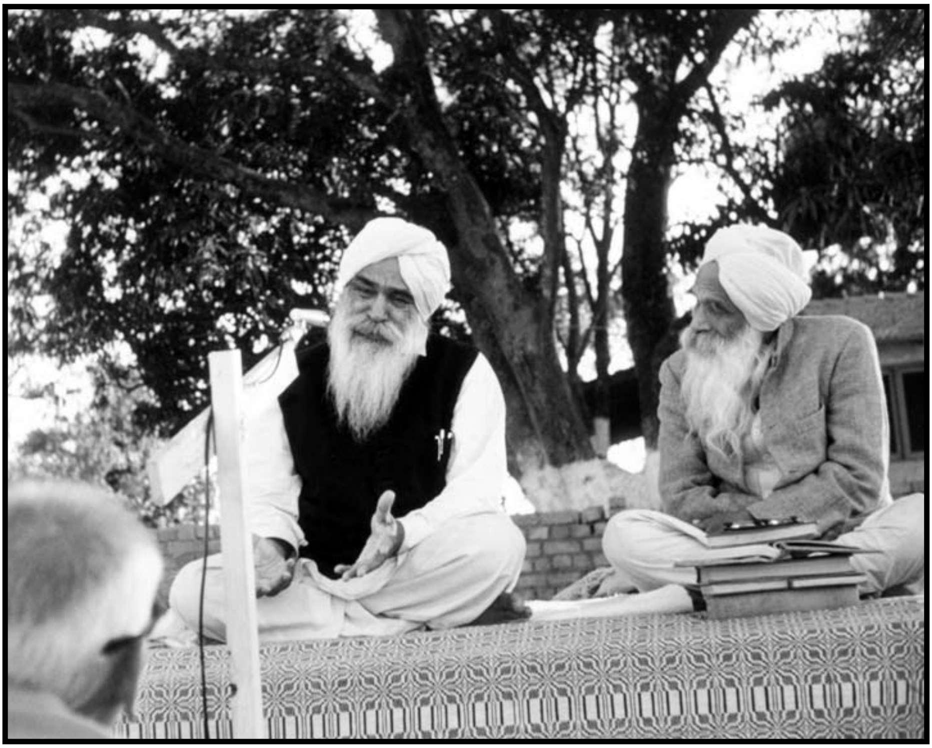

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना मुश्किल है परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं।'' जब उसका मरीज उसके बिछोड़े में तड़प रहा था वह विरह का वैद्य था उसने इस बीमारी को दूर किया और अपने प्यार की दवाई दी।

आज से तीस साल पहले राजस्थान में आमतौर पर अकाल पड़ते रहते थे तब यहाँ नहरों का सिस्टम नहीं था। पहले राजस्थान

की जिंदगी काफी मुश्किल थी आज तो नहरें आने से काफी सहूलियते हैं। एक गाँव में अकाल पड़ गया। अकाल पड़ने से लोग भूख की वजह से गाँव छोड़कर चले गए। एक आदमी ने बाजार में जाकर अपनी औरत को बहन बनाकर बेच दिया। उसने सोचा! अगर मैं औरत कहूँगा तो कोई इसे नहीं खरीदेगा। पैसे लेकर उसने अपनी गर्ज पूरी की। भूख, गरीबी आदमी से क्या नहीं करवाती!

कुछ समय बाद वहाँ बारिश होने लगी। वह औरत छत पर चढ़कर परमात्मा और बादलों की तरफ हाथ जोड़कर फरियाद करने लगी, ''यहाँ तो बरस या न बरस क्योंकि यहाँ तो दुनिया खुशहाल है लेकिन उस गांव में जाकर जरूर बरस जहाँ आदमी ने अपनी औरत को बहन बनाकर बेच दिया।''

मेरे दिल में भी ऐसा ही दर्द और ऐसी ही पुकारे होती थी। मैं यह चाहता था कि परमात्मा को प्राप्त करने के लिए अगर कोई भी कुर्बानी हो जाए तो वह छोटी से छोटी है। कबीर साहब कहते हैं, ''अगर आपके घाव लगा हो तो आप और घाव लगवाने के लिए तैयार नहीं हो सकते क्योंकि पहले घाव का दर्द सहना ही बहुत मुश्किल होता है।'' आपको परमात्मा ने सब कुछ दिया हो आप त्याग करके दिखाएं फिर ही बहादुरी है।

भर जवानी कोई शीलवंत विरला होय सो होय।

जवानी में कोई सूरमा बहादुर ही शील रखता है। ऐसा कोई करोड़ो में एक आध ही मिलेगा। हम बचपन में ही अपनी जिंदगी को तबाह कर लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''आपको जपी–तपी, सूरमें और दाते मिल जाएंगे लेकिन लाखों में कोई एक ही

शीलवंत मिलेगा जिसने अपनी जिंदगी को पवित्र रखा होगा। पढ़ना आसान है हर काम आसान है लेकिन ऊपर चढ़ाई करना और शील रखना, काम को वश में करना बहुत मुश्किल है।''

महात्मा हमें बताते हैं कि हम जीव काम इन्द्री के गुलाम हो जाते हैं, अपनी सेहत का सत्यानाश कर लेते हैं। काम इंसान से जानवर वाला काम करवा लेता है, जानवर ही बना देता है। काम आत्मा के सभी अच्छे गुणों को खराब कर देता है। हम सेहत का सत्यानाश करके सारी जिंदगी पछताते रहते हैं। कामी बेशर्म होता है उसे पास खड़ा हुआ आदमी दिखाई नहीं देता।

यही हालत क्रोध की है, क्रोध भी इंसान की शान्ति भंग कर देता है। यह बहुत बुरी आग है इंसान के अंदर से उठकर इंसानों को ही तबाह कर देती है। क्रोध इंसान की बेइज्जती का कारण बनता है, यह सब गुणों को खाक कर देता है। जब क्रोधी को क्रोध का दौरा पड़ता है तो वह भले–बुरे को भी नहीं पहचान सकता। क्रोधी अशान्त होता है जो उसके पास रहते हैं वह उन्हें भी अशान्त कर देता है। सन्तों ने क्रोध को चंडाल कहकर बयान किया है। क्रोध इंसान की दृष्टि को धुंधला कर देता है।

लोभी आदमी माँस के लोथड़े से ज्यादा नहीं होता। लोभी की तृष्णा का कोई अंत नहीं होता। लोभी मृगतृष्णा की तरह सारी दुनिया में दौड़ा फिरता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''वही आदमी सबसे ज्यादा कंगाल है जिसके पास ज्यादा दौलत है।'' गुरु नानकदेव जी भी यही हालत बयान करते हैं:

लोभी दा वसाह न कीजे जेका पार वसाए।
अंत काल तित्थे ढोहे जित्थे हत्थ न पाए।।

मोह हमेशा हमें धोखा देता है। हम संसार में खाली हाथ आते हैं और हमने संसार से खाली हाथ ही चले जाना है।

हिन्दुस्तान में औरंगजेब बहुत शक्तिशाली बादशाह हुआ है। इसने बहुत से साधु–सन्तों को कष्ट दिया, अपने परिवार को भी कष्ट दिया यहाँ तक अपने पिता को कैद किया। अपने भाई का सिर काटकर गद्दी प्राप्त की। औरंगजेब ने दिल्ली में सरेआम गुरु तेगबहादुर साहब का सिर काटा था। औरंगजेब सुन्नी मुसलमान था इसने मुसलमानी मत को बढ़ाने के लिए हर तरीका अपनाया लोगों को लालच दिया, डर दिया।

आखिर मरने से कुछ दिन पहले औरंगजेब ने अपने हाथ से एक वसीयत लिखी। उस वसीयत में इसने लिखा कि मैं हिन्दुस्तान का शहन्शाह रहा हूँ। मैंने हुकूमत की है लेकिन इस समय मेरी आत्मा मुझे लानतें मार रही है कि तूने अच्छा काम नहीं किया और आत्मा यह भी कहती है कि अब पछताने से क्या फायदा?

औरंगजेब ने अपनी वसीयत में दर्ज किया कि मैं खाली समय में कुरान लिखा करता था उसमें से बचत के चार रूपये दो आने हैं जो मेरे नौकर आया बेग के पास हैं। आखिरी वक्त उन्हीं पैसो से मोटे खद्दर का कफन लाकर मेरे ऊपर डाला जाए। मेरी लाश को दफनाते वक्त मेरा लड़का आजम ही हाथ लगाए। मेरी कब्र घने जंगल में खोदनी है उसके ऊपर कोई पेड़ नहीं लगाना क्योंकि गुनाहगार आदमी छाया का हकदार नहीं होता। जहाँ से मेरा जनाजा निकले वहाँ अच्छे दोशाले नहीं बिछाने। मेरे बाद कोई राग–रंग नहीं करना क्योंकि मैं संगीत का दुश्मन हूँ। कब्र

में उतारते वक्त मेरा मुँह नंगा रखना है। मैंने सुना है अगर आदमी नंगे सिर अल्लाह ताला की दरगाह में जाए तो शायद बख्शा जाता है। मेरी कब्र पर कोई यादगार नहीं बनानी अगर थोड़ा बहुत कुछ करना चाहें तो कब्र पर कच्ची ईंटों का चबूतरा बना देना है। अभी भी दक्षिणी भारत के औरंगाबाद में कच्ची ईंटो का मकबरा खस्ता हालत में खड़ा है।

आखिर में औरंगजेब ने अपनी वसीयत में ये लफ्ज लिखे कि दुनिया में सबसे बदकिस्मत इंसान बादशाह ही होता है। मैं अल्लाह ताला के आगे दुआ करता हूँ कि अल्लाह ताला किसी को बादशाह न बनाए। आप सोचकर देखें! इतने बड़े मुल्क का बादशाह हो जिसने हिन्दुस्तान पर 27–28 साल राज्य किया लेकिन मरते वक्त उसके कैसे ख्याल थे?

मैं आपको कोई इतिहास नहीं सुना रहा सिर्फ यही बता रहा हूँ कि इंसान इस दुनिया में खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही चला जाता है। वह अंत समय में पछताता है लेकिन आखिरी वक्त में पछतावा उसके काम नहीं आता। महात्मा कहते हैं:

तख्त जिन्हां दा चुकण परियां, उड्डन विच हवाई चढ़ियां, मिट्टी विच मिलाए सू।

ऐसे अय्याशी आदमी मिट्टी में मिल जाते हैं आखिर में पछताते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम दुनियादारों को माँगना भी नहीं आता कि क्या मांगना है, किसे प्राप्त करना है?'' सब महात्माओं ने इस दुनिया को दुखों की नगरी कहकर बयान किया है कि यहाँ कोई सुखी नजर नहीं आता। यह सच है कि यहाँ अंधा, अंधे का आगू है। यह विचार गुमराह करने वाला है:

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

महात्मा बताते हैं कि हमने किस चीज को प्राप्त करना है किस चीज की खोज करनी है? सबसे पहले पूरे सतगुरु की खोज करें, उनसे नाम माँगें क्योंकि नाम के बिना हम जो भी संसारिक वस्तुएं माँगते हैं उनके पीछे बहुत बड़ा दुख छिपा होता है। गुरु मिल जाता है तो उसके साथ सच्चे दिल से प्यार करें वह जो कहता है आप वह करें।

अगर सेवक गुरु के कहे मुताबिक करता है तो गुरु बेईंसाफ नहीं। वह हमारे अंदर बैठा है, दिलों की जानता है; हम भूले हुओं को रास्ते पर डालता है। कबीर साहब कहते हैं, ''जिसके मुँह से सपने में बरड़ाकर भी गुरु का नाम निकलता है मेरे चमड़े की जूती बनाकर उसके पैर में पहना दें तो मुझे खुशी होगी।''

गुरु की कद्र, नाम की कद्र महान आत्मा को होती है। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि नाम की दौलत कितनी बड़ी है। आपके आगे दादू साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। इस शब्द में दादू साहब बहुत प्यार से कहते हैं, ''हे परमात्मा! मैं आपसे संतोष माँगता हूँ सत माँगता हूँ। मुझे दुनिया की किसी चीज की जरूरत नहीं मुझे तेरी जरूरत है।''

मैं बताया करता हूँ जिस तरह कोई बादशाह दूसरे मुल्क में गया। उसके जाने के बाद रानियों के दिल में राजा के लिए प्यार जागा। हर रानी ने पत्र भेजा कि हमारे श्रृंगार के लिए ये–ये वस्तु लेकर आना लेकिन राजा जिस रानी का मान नहीं करता था दूसरी रानियां उसे पगली समझती थी उस रानी ने पत्र में लिखा पतिदेव! मुझे किसी वस्तु की जरूरत नहीं सिर्फ आपकी जरूरत है।

जिस रानी ने जो सामान माँगा था राजा वह सामान ले आया और उस सामान को रानियों के महल में पहुँचा दिया लेकिन जिस रानी ने राजा को माँगा था वह उसके महल में जाकर बैठ गया। दूसरी रानियाँ एक–एक वस्तु लेकर बैठी थी लेकिन पति प्यार को तरस रही थी। जहाँ जाकर राजा बैठा वहाँ पति का सुख था और वस्तुओं की भी कोई कमी नहीं थी।

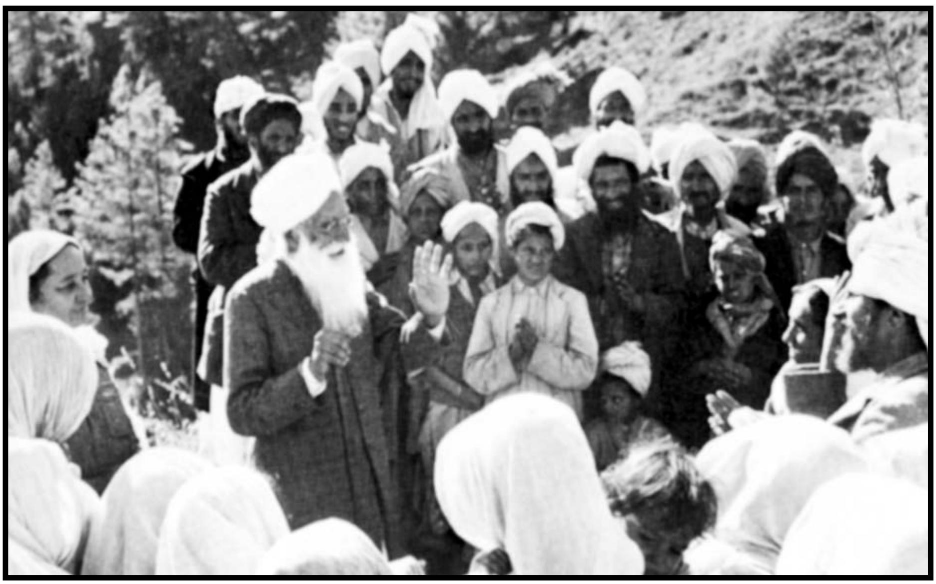

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपने कोई अलमारी बनवानी है आप रोज–रोज मिस्त्री के पास जाएंगे तो आपका वक्त खराब होगा अगर आप मिस्त्री के साथ प्यार करके उसे अपने घर ले आएं तो आप जो चाहे बनवा सकते हैं।''

इसी तरह अगर हम गुरु से गुरु को माँगें तो किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। गुरु अपनी सारी बरकतें लेकर हमारे अंदर बैठ जाता है, वह हमारी हर जरूरत पूरी करता है।

साईं सत संतोख दे, भाव भगत बिश्वास।
सिदक सबूरी साँच दे, माँगे दादू दास।।

दादू साहब गुरु के आगे पुकार करते हुए कहते हैं, ''तू मुझे सत संतोख, सिदक और सब्र दे। मुझे अपनी भक्ति का प्यार दे।'' हम प्यार से कोई भी काम करें तो वह बोझ नहीं लगता।

जीवत माटी ह्वै रहो, साईं सनमुख होय।
दादू पहले मरि रहो, पीछे मरे सब कोय।।

दादू साहब कहते हैं, ''आखिर एक दिन मौत आनी है क्यों न जीते जी उस मौत के साथ मुकाबला किया जाए। जब गुरुओं के दर्शन के लिए जाएं उस समय अपने आपको मिट्टी जैसा बना लें इस तरह समझें कि आपमें साँस ही नहीं है क्योंकि वे दिलों की जानते हैं सब कुछ समझते हैं।''

यह एक सच्चाई है कि मैंने परमपिता कृपाल की हिस्ट्री नहीं पढ़ी थी। मैंने आपसे यह सवाल नहीं किया था कि आप शादी शुदा हैं या नहीं, आपके बच्चे हैं या नहीं और आपकी क्या जाति है? मुझे प्यार था, भरोसा था मुझमे सिदक थी। मैं अपनी जिंदगी में पूरे गुरु को माँग रहा था। वह दया का समुंद्र था, उसमें से लहर उठी तो वह खुद ही तपती आत्मा की प्यास बुझाने के लिए चला आया। मेरे आश्रम में बहुत से आदमी सवाल करने के लिए भी आए थे। महाराज जी ने बहुत प्यार से उन्हें यह कहानी सुनाई:

बाहर जंगल में एक टूटा हुआ कुआँ था, एक राहगीर उस कुएँ में गिर गया। वहाँ से कोई आदमी जा रहा था उसने सोचा!

इंसान का बच्चा है इसकी सेवा करनी चाहिए। उसने कुएं में रस्सी फैंककर कहा, ''तू इस रस्सी को पकड़ ले मैं तुझे ऊपर खींच लेता हूँ।'' कुएँ में गिरे हुए आदमी ने उससे सवाल करने शुरू कर दिए, ''यह कुआँ कब बना, इस कुएँ को किसने बनवाया, मैं इस कुएँ में क्यों गिरा और इसमें कितने आदमी आ सकते हैं?'' कुएँ के बाहर खड़े आदमी ने उससे कहा, ''पहले तू बाहर आ जा फिर चाहे जो सवाल करना।'' जब वह नहीं माना तो उसने रस्सी छोड़ते हुए कहा कि इस कुएँ में तेरे जैसे अनेकों ही आ सकते हैं अगर वह समझदार व्यक्ति होता तो सबसे पहले बाहर आता फिर उससे जो मर्जी सवाल करता।

हमारी भी यही हालत है हम सवाल–जवाब की बजाय भजन करें और सन्त–सतगुरु हमें जो समझाते हैं उनके कहे अनुसार ख्यालों को पवित्र बनाएं। हमारे अंदर जो शब्द–रूप होकर बैठा है वह बेइंसाफ नहीं। वह हमारी प्यार भरी हालत देखकर जरूर दरवाजा खोलेगा।

दादू दावा दूर कर, निरदावे दिन काट।
केते सौदा करि गये, पंसारी के हाट।।

हम इस दुनिया में आए हैं तो हमें सोचना पड़ेगा कि हमें परमात्मा ने इंसान का जामा क्यों दिया है, हमनें इसका इस्तेमाल किस तरह करना है? दादू साहब कहते हैं, ''यहाँ बड़े–बड़े राजा महाराजा डिक्टेटर हुए हैं जिनके मुँह से निकला एक शब्द कानून बन जाता था लेकिन आज वे इस संसार से नामोनिशान मिटाकर चले गए हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

यह तन कागज की पुड़िया बूँद पड़त गल जाओगे।
कहत कबीर सुनों भई साधो ईक नाम बिना पछताओगे।।

कुम्हार मिट्टी को गूँथकर बर्तन बना रहा था। मिट्टी कुम्हार से कहती है कभी उस दिन को आँखों के आगे लाएगा जिस दिन मैंने तुझे अपने अंदर ही समा लेना है।

माटी कहे कुम्हार को तू क्या रोंदे मोहे।
ईक दिन ऐसा आएगा मैं रौंदूगी तोहे।।

दादू दावा आदि का, निरदावा कैसा।
दिल की दुरमति दूर कर, सौदा कर ऐसा।।

दादू साहब कहते हैं, ''अगर दुनिया में कोई मान करने वाली चीज है वह परमात्मा की भक्ति है, परमात्मा का प्यार है। अपने दिल को साफ रखें अपने दिल में किसी के लिए घृणा न लाएं किसी का बुरा न सोचें सबके अंदर परमात्मा बैठा है।''

नहीं तहां से सब हुआ, फिर नाहीं हो जाय।
दादू नाहीं हो रहो, साहिब से लौ लाय।।

आप कहते हैं, ''तुझे पता नहीं कि कब साँस की गतिविधि रूक जाएगी? कब टेलिफोन कर दिए जाएंगे कि फलाना आदमी संसार छोड़ गया है इसलिए जब तक साँस की गतिविधि चलती है परमात्मा की भक्ति करें, परमात्मा के साथ अपनी लिव जोड़ लें।''

उपजै बिनसै गुन धरै, यह माया का रूप।
दादू देखत थिर नहीं, छिन छाया छिन धूप।।

दादू साहब एक मिसाल देते हैं, ''आप रोज आँखों से देखते हैं कि पेड़ की छाया एक जगह नहीं टिकती, जहाँ छाया है थोड़ी देर में वहाँ धूप आ जाती है। आप अपने साथियों को भी देखते हैं कि जो पैदा होता है वह संसार जरूर छोड़ता है। हम श्मशान भूमि में जाते हैं अपने–अपने रीति–रिवाज के मुताबिक मृतक शरीर को ठिकाने लगाते हैं। कोई मृतक शरीर को कब्र में दफना देता है कोई लकड़ियों से जला देता है फिर भी हमारे कान पर जूं नहीं रेंगती कि हमें भी मौत आएगी। हम कहते हैं कि मौत और लोगों के लिए है हमारे लिए तो शायद! शराब–कबाब और ऐशो–ईश्रते ही हैं।''

एक बार गुरु नानकदेव जी श्मशान भूमि में गए। वहाँ खड़े लोगों ने कहा कि महाराज! कोई अच्छी सी बात सुनाएं जिसका दिल पर अच्छा असर हो। तब गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द उचारा:

जागो जागो सुत्तयो चलया बणजारा।

आप जागें और देखें! आपके साथ वाला चला गया है। महात्मा रविदास जी परमसन्त थे। आप कहते हैं:

जो दिन आवे सो दिन जाही, करना कूच रहन थिर नाहीं।

सज्जनों! जो जन्मा है उसने जरूर जाना है। कोई भी बंदा यहाँ थिर नहीं चाहे वह गरीब है चाहे अमीर है। चाहे मर्द है चाहे औरत है। चाहे राजा है चाहे प्रजा है।

बिपति भली गुरु संग में, काया कसौटी दुख।।
नाम बिना किस काम के, दादू संपति सुख।।

दादू साहब कहते हैं, ''सन्त–सतगुरु के साथ काया को कितने भी कष्ट सहने पड़े तो वे स्वर्ग से कम नहीं होते। नाम के बिना चाहे आपके पास सारी दुनिया की दौलत और सारे सुख हैं वे आपके किस काम आएंगे? क्योंकि इस संसार से हमारे साथ जाने वाली चीज सिर्फ नाम ही है। दुनिया का सामान और देह को यहीं छोड़कर चले जाना है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन नामे को संग न साथी, मुक्ते नाम ध्यामणया।

क्या मुख ले हँस बोलिये, दादू दीजै रोय।
जनम अमोलक आपना, चला अकारथ खोय।।

दादू साहब कहते हैं, ''हम क्या बोलें! दुनिया की हालत देखकर रोना ही आता है क्योंकि हम विषय–विकारों को भोगते हैं जिससे हमें दुख और कष्ट ही मिलते हैं। हम अपने जन्म की ही कद्र नहीं करते जन्म ही खोकर चले जाते हैं; इससे तो रोना ही अच्छा है।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।

नाम जपना, नेक बनना हम किसी के ऊपर एहसान नहीं कर रहे, यह तो हम अपने जीव पर दया कर रहे होते हैं।

दादू दयाल ने बहुत प्रेम–प्यार से समझाया कि हमें परमात्मा से क्या माँगना चाहिए, किस चीज को इकट्ठा करना चाहिए, क्या चीज हमारे साथ जाएगी? वह चीज नाम है गुरु का प्यार है। हमें भी चाहिए कि गुरु के प्यार को हासिल करें, अभ्यास करें अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

7 मई 1985

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

एक प्रेमीः- *महाराज जी! क्या झूठे गुरु जोत दे सकते हैं? झूठे गुरु के द्वारा दी गई जोत और सच्चे गुरु के द्वारा दी गई जोत में क्या फर्क होता है?*

बाबा जीः- हाँ भई! आपको ऐसे सवालों के जवाब मिस्टर ओबराय की लिखी किताब में मिल जाएंगे। यह किताब इंग्लिश में है। आज मैं आपको उसका जवाब देने की कोशिश करूंगा।

मिस्टर ओबराय महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था। वह महाराज कृपाल के गाँव का था, महाराज कृपाल का खास सेक्रेटरी था और महाराज कृपाल को अपने बच्चों से भी ज्यादा प्यारा था। यह किताब तीन हिस्सों में लिखी गई है। पहला हिस्सा *बुक ऑफ बाबा सावन*, दूसरा हिस्सा *बुक ऑफ सन्त कृपाल* और तीसरा हिस्सा *बुक ऑफ सन्त अजायब* है।

प्रेमी ने जो सवाल किया है इसका जवाब आपको *बुक ऑफ अजायब सिंह* के हिस्से में भी मिलेगा। आपको इसमें झूठे गुरुओं के बारे में बहुत कुछ मिलेगा कि किस तरह झूठे गुरुओं को काल कष्ट देता है। इस किताब को लिखने में ओबराय ने बहुत मेहनत की है।

आज मैं आपको स्पष्ट खोलकर बताता हूँ कि जिस तरह अच्छाई-बुराई शुरू से ही चली आ रही है। मौत-पैदाईश भी इंसान के अंदर है। इसी तरह सच्ची और झूठी जोत भी इंसान के अंदर है। असल की नकल आज से ही नहीं होने लगी जब से संसार बना है असल की नकल तब से चली आ रही है। आप यह तो मानेंगे ही

जीवन देने वाला देवता भी अंदर है और मौत का देवता भी अंदर है। काल ने बहुत मेहनत-मशक्कत करके सतपुरुष की तपस्या की। भँवर गुफा से नीचे ये मंडल, आत्माएं सारी काल की ही रचना है।

मेरा जातिय तजुर्बा है जिनका दस नाखूनों की मेहनत का पैसा होता है वे सोच-समझकर उस पैसे को खर्च करते हैं। आप उनके बाथरूम में जाकर देखेंगे तो आपको नहाने के लिए एक साबुन मिलेगा कोई खास किस्म के तेल नहीं मिलेंगे। जिनके पास हराम का पैसा आया होता है उनके बाथरूम में अच्छा फर्नीचर होगा कई किस्म के तेल और कई किस्म के साबुन होंगे; नहाने वाला भी कमाल का ही होता है।

इसी तरह काल ने एक बार सत्तर युग और दूसरी बार चौंसठ युग सतपुरुष की भक्ति की। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुप्ते बूझे जुग चेतारे।

यह भी एक अंदाजा ही है हो सकता है इससे भी ज्यादा भक्ति की हो। हम मेहनत के पैसे को किस तरह संभालकर खर्च करते हैं और हराम के पैसे को लापरवाही से खर्च करते हैं। इसी तरह काल ने बहुत मेहनत करके कितने युग बिताए हैं। जिसने इतनी मेहनत की है उसने आत्माओं को रखने के लिए भी बहुत मेहनत की है। शरीर में जिस किस्म की जोतें सतपुरुष की हैं काल ने भी उसके मुताबिक ही जोत और शब्द की आवाज रखी हुई है।

इस देह के छह चक्र हैं। पहला गुदा चक्र है उस पर गणेश का राज्य है यहाँ पृथ्वी का तत्व है। दूसरा इन्द्री चक्र है उस पर ब्रह्मा का राज्य है जो दुनिया की रचना करता है यहाँ पानी का तत्व है। तीसरा नाभि चक्र है इस चक्र का मालिक विष्णु है यहाँ अग्नि का तत्व है। चौथा हृदय चक्र है यहाँ शिव और पार्वती की हुकूमत है।

शिव प्राणों के भंडार का मालिक है यहाँ पवन का तत्व है। पाँचवा कंठ चक्र है यहाँ शक्ति का राज्य है। छठा आज्ञा चक्र है, यहाँ मन और आत्मा की सीट है यह दोनों आँखों के दरम्यान है। इन चक्रों की अलग-अलग जोत और अलग-अलग आवाजें हैं।

सच्चाई के ग्राहक बहुत कम होते हैं। आम जीव धक्के खाने वाले ही होते हैं वे जहाँ ज्यादा भीड़ और तगड़ी पार्टी देखते हैं वहीं सच्चा गुरु समझते हैं। पलटू साहब ने भी कहा थाः

जिसके साथ दस-बीस तिसका नाम महन्त।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि भीड़ यह सबूत नहीं देती कि यहाँ पूरा महात्मा है। आमतौर पर जहाँ कई लाख लोग इकट्ठे होते हैं हम कहते हैं यहाँ कुछ है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप यह न देखें कि किस स्कूल में ज्यादा बच्चे जाते हैं आप यह देखें कि किस स्कूल के ज्यादा बच्चे पास होते हैं।''

हिन्दुस्तान में भगवान के नाम पर बहुत सारे आश्रम, मठ चल रहे हैं, जो स्वर्गों जैसे हैं। वहाँ पश्चिम के लोगों को हर किस्म की सहूलियतें दी जाती हैं। बेशक कनाट प्लेस की सड़क से किसी अंग्रेज को पकड़कर उसके साथ बाबा की फोटो खिंचवाकर कहें देखो! पश्चिम के आदमी भी हमें मानते हैं। जिसे छह महीने अच्छा बिस्तर, अच्छा खाना-पीना और चार नौकर मिलें उसका थोड़ा बहुत हाथ जोड़कर बैठने में क्या लगता है!

आपको पता ही है कि यहाँ किसी किस्म की कोई सहूलियत नहीं, हम शहर के नजदीक नहीं जंगल में बैठे हैं। यहाँ कोई दस दिन से ज्यादा नहीं रह सकता। अगर यहाँ कोई बिना इजाजत के आता है तो मैं उसे उसी समय वापिस भेज देता हूँ। पश्चिम से भी ऐसे लोग आ जाते हैं जिन्हें मुफ्त का खाने की आदत पड़ जाती है।

वे मुझे मिसाल देते हैं कि हमें उस मठ में तो छह महीने रहने दिया। मैं उनसे कहता हूँ भ्रावा! तू वहाँ छह महीने और लगा ले। जब सच्ची आत्माएं पुकारती हैं तो उसूल यह है कि परमात्मा उन्हें भटकने नहीं देता अपने आप ही सही जगह ले आता है।

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर मिलता है।'' अगर हम सच्चे होकर परमात्मा को ढूंढेंगे सच्चे दिल से दिन-रात उसकी याद में तड़फेंगे तो वह खुद हमारे पास चलकर आएगा या हमें अपने पास बुलाएगा; वह हमें भटकने नहीं देगा। परमात्मा को हमारा बहुत फिक्र होता है। वह जिस पोल पर काम करता है उसे इन आत्माओं का सारा फिक्र सौंपा होता है।

झूठे गुरु थ्योरी समझाने में बहुत माहिर होते हैं। झूठा ज्यादा भेष बनाकर रखता है सच्चे को सजावट करने की जरूरत नहीं होती। जो झूठे गुरुओं के पास जाते हैं जब झूठे गुरु थ्योरी समझाकर बिठाते हैं तो काल निचले चक्रों की जोत प्रकट कर देता है उन्हें निचले चक्रों की आवाज सुना देता है।

त्रियापद से लेकर भँवरगुफा तक काल ने हर मंडल में रूहों की डोरियां छिपाकर रखी हुई हैं। खासकर महासुन्न में तो बहुत आत्माओं की डोरियां छिपाई हुई हैं। महासुन्न से सिर्फ पूरा गुरु ही पार करवा सकता है, पूरा गुरु ही शिष्य की डोरियां काल से ले सकता है। जिसकी वहाँ पहुंच ही नहीं वह काल से डोरियां क्या लेगा? अगर आपने थोड़ी बहुत जोत देख भी ली तो क्या करेंगे?

आप कबीर साहब, गुरु नानकदेव से लेकर आज तक के सन्तों का इतिहास पढ़कर देख सकते हैं कि उन्होंने कितने-कितने साल मेहनत की तब कहीं जाकर वे अपने गुरु की दया से कामयाब

हुए। आज जिनके स्वर्गों जैसे बड़े-बड़े मठ हैं उनके संचालकों ने कभी चौंकड़ी लगाकर अभ्यास नहीं किया।

जब हिन्दुस्तान का बँटवारा नहीं हुआ था उस समय लाहौर में एक गूंगा पहलवान बहुत मशहूर हुआ है। वह सारी-सारी रात जागकर कसरत किया करता था। महाराज कृपाल उस पहलवान की मिसाल दिया करते थे कि मेहनत करके ही वह दुनिया में मशहूर हुआ। महाराज कृपाल ने अभ्यास के लिए रावी नदी को चुना था। आप पानी में खड़े होकर अभ्यास किया करते थे ताकि नींद न आए। एक बार परमपिता कृपाल रात के समय रावी नदी पर अभ्यास के लिए जा रहे थे। उन्हें देखकर सिपाही ने पूछा, ''आप इस समय कहाँ जा रहे हैं?'' आपने कहा, ''मैं अभ्यास के लिए जा रहा हूँ तू भी आ जा।'' सिपाही ने कहा, बस! आप ही ठीक हैं।

जब प्रेमी नाम लेकर मुझे पत्र लिखते हैं कि हमें उस तारीख को नाम मिल गया है। मैं उन्हें बहुत खुशी से पत्र लिखता हूँ कि अब आपका फर्ज है आप मेहनत करें अंदर जाकर सच्चाई को खुद देखें। आप सतगुरु के प्यार के समुंद्र में गोता लगाकर नाम का मोती निकालें। मेहनत से मेरा मतलब हमारे बच्चे सच्चाई को खुद देखें। मैं वायदे से कहता हूँ कि आप अंदर जाएं, अंदर आपका मार्ग किताब की तरह खुल जाएगा। अगर आपको अंदर गुरु न मिले तो आप आकर मुझे पकड़ सकते हैं।

मेरा प्रैक्टिल जीवन है। मैंने बाबा बिशनदास जी का बताया हुआ 'दो-शब्द' का अभ्यास सत्तरह साल किया। मैं कहा करता हूँ कि सन्तमत के पहले अभ्यास बहुत सख्त हैं उसके बाद इतनी तकलीफ नहीं होती रास्ता चल पड़ा होता है। परमपिता कृपाल ने भी मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा कि बेटा! अंदर की तरफ झाँक।

कल आपको वह जगह देखने का मौका मिलेगा। मैंने चार-पाँच साल यहाँ भी अभ्यास में लगाए हैं। पुराने आदमी इस जगह को पहले भी देख गए हैं। जिन लोगों ने मेरे साथ पच्चीस-तीस साल जीवन व्यतीत किया है मैं आज भी उन्हें चैलेंज करके कहता हूँ कि क्या किसी ने मुझे शहरों में फिरते हुए देखा है? क्या किसी ने मुझे अच्छा खाना खाते हुए देखा है? क्या कभी किसी ने मुझे खाने की निन्दा करते हुए देखा है?

मैं आम सतसंगियों को चैलेंज के साथ कह सकता हूँ कि जो लोग आज गुरुआई का काम कर रहे हैं और दावा करते हैं कि हम सच्चे गुरु हैं, वे मुझे टाईम दें या मुझसे टाईम लें मैं अंदर दिखा सकता हूँ कि झूठे गुरु की क्या हालत होती है। जब महाराज कृपाल ने मुझसे कहा कि तू दिल्ली चलकर आश्रम की संभाल कर। तब मैंने आपसे कहा, ''मैं सारी जिंदगी आपको खोजता रहा हूँ आप मुझे ईंटे ही दे रहे हैं। मैंने ईंटों का क्या करना है? मुझे आपकी जरूरत है, मैं आपको पाकर खुश हूँ।'' उस समय मेरे आश्रम में ईंटों का बहुत बड़ा ढ़ेर लगा हुआ था।

मेरे गुरुदेव ने कभी किसी के खेत का खाना नहीं खाया। आपने मेरे दस नाखूनों की मेहनत की गेहूँ खाई और यहाँ की गायों के दूध का घी खाया। महाराज जी आम सतसंगों में कहा करते थे कि मेरे आस-पास चीचड़ हैं। आप यह भी कहा करते थे कि हर व्यक्ति सोचता है कि मैं कब इसकी पगड़ी अपने सिर पर रखूँ। मैं इस बात को नहीं मानता था लेकिन जब गुरु खुंबो की तरह पैदा हो गए तब पता लगा कि महाराज कृपाल ठीक कहा करते थे।

जब महाराज कृपाल चोला छोड़ गए तब मैंने इस तरह का कार्यक्रम बना लिया कि मैं सारा दिन सारी रात अंदर ही रहता था

जब सब लोग सो जाते तो सिर्फ शाम को आठ बजे से नौं बजे तक एक घंटे के लिए बाहर निकलता था। मैंने बाहर से ताला लगवाया हुआ था। मैं शुरू-शुरू में प्रेमियों से चोरी बाहर भी निकल गया था, मैंने कई महीने गाँव किल्लयांवाली में बिताए। उस गाँव में किसी को पता नहीं था कि मैं कहाँ से आया हूँ उसका नतीजा यह हुआ कि वहाँ के लोगों को महाराज कृपाल की महक आनी शुरू हुई; वह सारा गाँव सतसंगियों का बन गया।

मेरी खोज में पाठी ने बहुत मेहनत की। जब मुझे वापिस लाए तो मैंने यह कार्यक्रम बनाया कि मैंने बाहर किसी को शक्ल नहीं दिखानी अंदर ही जीवन व्यतीत कर जाना है। आपके देश का डाक्टर मौलिनो आपके बीच बैठा है आप इससे पूछ सकते हैं क्या इसने मुझे दिल्ली या अमेरिका में देखा था? मैं न दिल्ली गया न अमेरिका या कनाडा गया मैं तो जमीन के नीचे बैठकर अपनी जिंदगी बिता रहा था। इसे सच्चा इश्क लगा तो इसने अपने अंदर ढूंढा। परमात्मा कृपाल ने इसे बताया कि मैं कहाँ काम कर रहा हूँ और मुझसे कैसे मिलना है?

आप रसल परकिंस से पूछें कि उसने कितनी मेहनत की। रसल परकिन्स ने बहुत मेहनत और मिन्नत करके मुझे बाहर निकाला। एक तरफ तो वे लोग हैं जो कोर्ट में जाकर यह दावा करते हैं कि हम सच्चे गुरु हैं। मैं सच्चाई का फैसला आपके ऊपर छोड़ता हूँ कि ये फैसला आप करें।

जब रसल परकिंस हिन्दुस्तान आया तो यह बड़े-बड़े मठो में गया। उन्होंने इसे हर किस्म का प्यार दिया, सहूलियतें देने की पेशकश की और अपने बराबर भी बिठाया। जब यह अजायब सिंह के पास आने लगा तो इसे पचास-साठ मील पहले ही यह संदेश

मिला कि मेरे पास कोई न आए। तब रसल परकिंस ने सिर पर हाथ मारा कि यह अच्छा महात्मा है जो यह कहता है कि मेरे पास कोई न आए जबकि दूसरे लोग तो पश्चिम के प्रेमियों के पैरों के नीचे हाथ देने के लिए तैयार फिरते हैं। जिसे सच्चाई की जरूरत होती है वह सहूलियतें नहीं ढूंढता वह तो सच्चाई ढूंढता है।

मैं आपको इतिहास की एक घटना बताता हूँ कि जब आठवें गुरु हरिकृष्ण ने कहा कि मेरे बाद बाबा बकाले ने काम करना है। उनके खानदान के सोढ़ी बाईस चारपाईयां लगाकर बाबा बकाला आकर बैठ गए। जो सारी जिंदगी तप-त्याग कर रहा था वह इस तरह की एक गुफा बनाकर बैठा था लोग उसे तेगा कमला कहते थे।

उन बाईस गद्दियों के मालिकों ने अच्छे-अच्छे ऐजेंट रखे हुए थे, जो लोगों को अपने अनुभव बताया करते थे। जब मक्खन शाह लुभाणे का जहाज डूब रहा था तो उसने गुरु हरिकृष्ण जी के लंगर में पाँच सौ मोहरें देने का वायदा किया। जब उसे पता लगा कि हरिकृष्ण जी बाबा बकाले बताकर ज्योति-जोत समा गए हैं। वह बाबा बकाला आया तो वहाँ बाईस गुरु बैठे थे। वह जिससे मिलता उसका एजेंट कहता यही सच्चा गुरु है। वह सबके आगे पाँच-पाँच मोहरे रखता गया कि जो सच्चा होगा वह खुद ही बोल पड़ेगा।

दो औरतें पानी भरने जा रही थी। मक्खन शाह लुभाणें ने उन औरतों से पूछा कि सोढ़ियों में कोई और भी गुरु है? उन औरतों ने कहा कि है तो सही लेकिन वह किसी भी गिनती में नहीं लोग उसे तेगा कमला कहते हैं। आमतौर पर गुरु तेग बहादुर जी नीचे गुफा में मस्ती की हालत में रहते थे।

जब मक्खन शाह गुरु तेग बहादुर के पास गया तो उसने उनके आगे भी पाँच मोहरे रखी। सन्त ऐसा नहीं करते फिर भी

कभी लोगों को सच्चाई बताने के लिए उन्हें ऐसा करना पड़ा। गुरु तेग बहादुर ने अपना कंधा नंगा करके दिखाया, ''देख सेवका! तेरा जहाज बचाते हुए मेरे कंधे में कील चुभे हुए हैं। तू लंगर में पाँच सौ मोहरे डालने का वायदा करके अब पाँच मोहरे ही डाल रहा है।'' बस! इतनी बात कहने की देर थी कि मक्खन शाह लुभाणा कोठे पर चढ़कर होका देने लगा, ''गुरु लाधो रे गुरु लाधो रे।''

मक्खन शाह लुभाणे ने गुरु तेगबहादुर को बाहर निकालकर स्टेज लगाई कि अब ये सतसंग करें ताकि लोगों को पता लग जाए और झूठे गुरु अपनी चारपाईयां उठाकर चले जाएं। सोढ़ियों के शिरोमणि धीरमल से यह बर्दाशत नहीं हुआ उसने अपने एक सेवक से गुरु तेग बहादुर साहब के ऊपर गोली चलवाई लेकिन गुरु तेग बहादुर साहब बाल-बाल बच गए। जब बिरादरी ने बहुत विरोध किया तो आप असम की तरफ चले गए फिर आपने माखोवाल में जमीन खरीदकर आनन्दपुर साहब बसाया।

जब गुरु नानकदेव जी ने अंगद से कहा कि मेरे बाद तूने काम करना है तो अंगददेव जी हाथ बाँधकर खड़े हो गए और उन्होंने कहा कि गठरी बहुत भारी है उठानी बहुत मुश्किल है। गुरु नानकदेव जी के लड़के नाराज होकर अंत समय गुरु नानकदेव जी के पास नहीं आए कि इन्होंने हमें गददी नहीं दी।

महाराज कृपाल ने महाराज सावन के जाने के बाद कोई झगड़ा खड़ा नहीं किया। आप डेरा ब्यास में अपना मकान छोड़कर ऋषिकेश के जंगलों में चले गए थे। प्रेमी उन्हें खींचकर संगत की सेवा के लिए लाए।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा विदाई के समय प्रेमियों को एक संदेश

लगातार गुरु की याद

मुम्बई

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया। हमें सदा सर्व समर्थ कृपाल के चरणों में यह प्रार्थना करनी चाहिए कि आप सदा हमें अपनी भक्ति का खजाना दें और हमें हमेशा अपनी भक्ति में लगाए रखें क्योंकि आप अपने भक्तों से प्यार करते हैं।

कल कबीर साहब ने हमें प्यार से बताया था कि साधु के दर्शन से हम परमात्मा को याद करते हैं। हम जो समय साधु के साथ बिताते हैं वह हमारी भक्ति में शामिल होता है बाकी पलों की गिनती नहीं होती। हमारे जीवन के वे दिन वे पल सबसे ज्यादा मूल्यवान हैं जो हम अपने प्यारे गुरु परमात्मा के साथ बिताते हैं।

मैं इस प्रोग्राम में शामिल होकर बहुत खुश हूँ। बहुत से प्रेमियों ने इस प्रोग्राम में बहुत कुछ पाया है, मैं आशा करता हूँ कि प्रेमी इसे संभालकर रखेंगे। हमें जो भी इस प्रोग्राम से मिला है हम उसे तभी संभालकर रख सकते हैं अगर हम अपने घर वापिस जाकर भी अपने भजन-अभ्यास को जारी रखेंगे।

मैं अमेरिका या हिन्दुस्तान के सभी प्रोग्रामों में प्रेमियों को सदा ही प्यारे परमात्मा कृपाल के शब्दों को दोहराया करता हूँ, ''हमें सतसंग के लिए सौ काम और भजन पर बैठने के लिए हजार काम छोड़ देने चाहिए। हमें अपने शरीर को तब तक खाना नहीं देना चाहिए जब तक हम अपनी आत्मा को खाना न दे दें। जैसे खाना हमारे शरीर को शक्ति देता है वैसे ही हमारी आत्मा का खाना शब्द-नाम का अभ्यास है।''

आप जानते हैं अगर हम एक दिन खाना न खाएं तो हमारा शरीर कमजोर हो जाता है इसी तरह हमारी आत्मा भी जन्मों-जन्मों से भूखी है जब तक आत्मा को अभ्यास की खुराक न दे लें तब तक शरीर को खुराक न दें।

आज मैं शारीरिक रूप से आपसे दूर जा रहा हूँ इसी तरह एक बार मेरे प्यारे परमात्मा कृपाल शारीरिक रूप से मुझसे दूर जा रहे थे चाहे आप शब्द रूप में हमेशा मेरे साथ थे। उस समय मैं रोया, मैंने आपके आगे आँसू बहाए। आपने मुझसे कहा, ''तुम रो क्यों रहे हो? क्या तुम सोचते हो कि मैं तुमसे दूर जा रहा हूँ? तुम्हें तभी रोना चाहिए जब मैं तुम्हारे अंदर से दूर चला जाऊँ, तुम्हारी मदद न करूं।'' प्यारेयो! आप अब तक अपना वचन निभा रहे हैं। आप हमेशा हमारी मदद कर रहे हैं, आप सदा हमारे अंदर हैं।

प्यारेयो! जब आप वापिस अपने घर जाएंगे तो आपने यह नहीं सोचना कि आपकी ड्यूटी खत्म हो गई है। आपको **लगातार गुरु की याद** जारी रखनी है और हमेशा अभ्यास करना है। जब आप साँस लेते हैं तब आपका सिमरन चलना चाहिए और जब साँस बाहर छोड़ते हैं तब भी सिमरन चलता रहना चाहिए।

हर साँस के साथ **लगातार गुरु की याद** बनाकर रखनी है। सिमरन करते हुए दुनियावी जिम्मेवारियों को निभाते हुए अपना भजन-अभ्यास करना है, सतसंग में जाना है। परमात्मा कृपाल ने हमें अपने आपको सुधारने के लिए जो डायरी दी है वह भी भरनी है। हमें अपना जीवन गुरु के कहे अनुसार बनाना है।

मैं परमपिता परमात्मा कृपाल से अरदास करता हूँ कि आप सब अपने घर सुरक्षित और खुशी से पहुँचें, वहाँ संगत में गुरु का प्रेम-प्यार बाँटें।

12 जनवरी 1986

***

जब महाराज कृपाल ने मुझे नामदान देने का हुक्म दिया तब मैंने आपको अपना असली रूप दिखाने के लिए कहा

हमारे प्यारे सतगुरु जैसा, हमने न कोई और देखा, (2)
वे तो महान हैं मेरे सतगुरु (2) उनसा महान न और देखा, (1)
हमारे प्यारे.....

वे हैं दोनों जहाँ के मालिक, दुनिया के दिल में बसने वाले,
हर घट के ज्ञाता हैं वे ज्ञानी, दिलों की बातें जानने वाले, (2)
शब्द स्वरूप है रूप उनका (2) रूप जो हमने आँखों से देखा,
हमारे प्यारे.....

देखे तो देखने वाला देखे, देखे तो देखता ही रह जाए,
प्यारी मूरत प्यारी सूरत, देखने वाला उनका हो जाए, (2)
मन मोहक मन को भाने वाला (2) मन भावन हम सबने देखा,
हमारे प्यारे.....

देखा तो शायद हर नजर ने देखा, अपने अपने ख्याल से,
जिसने भी उनको प्यार से देखा, निकला वो इस मझधार से, (2)
वे तो हैं इक महान नाविक (2) भरकर नाव ले जाते देखा,
हमारे प्यारे.....

वह नाविक गुरु कृपाल है प्यारे, सावन प्यारे का प्यारा,
कृपा का सागर कृपाल है प्यारे, अजायब को जान से भी प्यारा, (2)
वे तो अति सुंदर सलोने(2) उनका हुआ जिसने देखा,
हमारे प्यारे.....

जब पहली बार महाराज कृपाल ने मुझे कुछ लोगों को 'नामदान' देने के लिए कहा तब आपने मुझे उन लोगों को थ्योरी समझाने और सिमरन करवाने के लिए कहा। मैंने खड़े होकर अपने दोनों हाथ जोड़कर प्यार से प्रार्थना की, ''हे प्यारे प्रभु! आप सच्चे शहन्शाह हैं, आपके घर में किसी चीज़ की कमी नहीं है। आप इन लोगों को अपना खुला दर्शन दें। मैं अपने उस अनुभव को कभी नहीं भूल सकता जब आपने मुझे अपना खुला दर्शन दिया था।''

उस अनुभव के समय मैंने महाराज कृपाल से पूछा था कि बुल्लेशाह के गुरु इनायत शाह भगवान थे, वह सारी सृष्टि के मालिक थे। बुल्लेशाह को यह पता था फिर भी उन्होंने इनायतशाह को सबसे बड़ा धोखेबाज क्यों कहा?

उस समय सर्दी का मौसम था, रात के आठ या नौं बजे थे। महाराज कृपाल कमरे में रजाई ओढ़कर बैठे थे। आपने अपनी रजाई उतार दी हालांकि उस समय बहुत ठंड थी फिर भी मुझे उनके पूरे शरीर में से गर्माहट आती महसूस हो रही थी। उनका पूरा शरीर रोशनी से भर गया, उनका माथा और आँखें रोशनी बिखेर रही थी। वह रोशनी इतनी तेज थी कि सारा कमरा उस रोशनी से भर गया।

प्यारे गुरु कृपाल ने जवाब दिया कि जब शिष्य अंदर जाता है सच्चाई को और गुरु की हकीकत को देखता है तो उसे एहसास होता है कि गुरु सबसे बड़ा धोखेबाज है। गुरु होता कुछ और है और हमें बताता कुछ और है। हम गुरु को बाहरी तौर पर अपनी तरह साँस लेते, चलते-फिरते, बीमार होते और कर्मों का भुगतान करते हुए देखते हैं जबकि वह यह सब दूसरे लोगों की खातिर करता है।

हम उसे सब कुछ वैसे ही करते हुए देखते हैं जैसे हम खुद करते हैं। वह हमें जैसा दिखता और लगता है वैसा नहीं होता। वह सर्वस्वामी होकर भी हमारे सामने बहुत छोटा और नम्र बन जाता है। वह हमें बताता है कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ, तुम्हारा गुरु 'शब्द' है। मैंने तुम्हें 'शब्द' के साथ जोड़ दिया है लेकिन वह खुद ही 'शब्द' है। क्या यह धोखा नहीं? धोखेबाज कहते कुछ हैं लेकिन उनके दिल में होता कुछ और है। इसी तरह गुरु बाहरी तौर पर हमारे जैसे दिखते हैं लेकिन अंदरूनी तौर पर ऐसे नहीं होते।

रानी इन्द्रमति कबीर साहब की भक्त थी। जब वह शरीर से ऊपर उठकर अंदर के मंडलों में गई तो उसने देखा कि कबीर साहब परमेश्वर

के सिंहासन पर बैठे हैं। उसने कबीर साहब के चरणों में झुककर कहा, ''अगर आप मुझे पहले बता देते कि आप ही सारी सृष्टि के मालिक है तो मैं अभ्यास और बाकी परेशानियों से नहीं गुजरती, तभी आपके चरणों में झुक जाती।'' कबीर साहब ने कहा, ''अगर मैं तुम्हें पहले ही बता देता कि मैं सारी सृष्टि का मालिक हूँ तो तुम मुझ पर विश्वास न करती। तुमने जो करना है वह सब अब कर सकती हो।''

जब आप अंदर जाकर गुरु को देख लेते हैं कि वह क्या है? और जब आप बाहर भी उसके महिमामंडित रूप को देख लेते हैं तब आप छोटे और नम्र बन जाते हैं। जब आप गुरु की असलियत को देख लेते हैं तो आपको एहसास हो जाता है कि गुरु सबसे बड़ा है, महान है। सारी सृष्टि का मालिक है और उसके शरीर के हर रोम में से रोशनी निकल रही है; तब आपमें से अहंकार और मैं-मेरी खत्म हो जाते हैं।

उस वाक्या को याद करते हुए मैंने आपसे कहा, ''महाराज जी! आप इन्हें अपना खुला दर्शन क्यों नहीं दे देते? अगर आप इन्हें अपना खुला दर्शन दे देंगे तो पंडित और मुल्ला के बीच की सारी लड़ाई खत्म हो जाएगी, हर तरफ शान्ति हो जाएगी। लोगों के माथों पर तिलक लगाने के लिए पंडित जो केसर मिलाते हैं वे इसका इस्तेमाल नहीं करेंगे। मुल्ला, अल्लाह के नाम पर लोगों को जगाना भूल जाएगें। गुरुद्वारे के भाई भी रुक जाएंगे कि वह क्या कर रहे हैं? हर घर में सिर्फ आपकी ही बात होगी अगर आप पूरे संसार पर अपनी दया नहीं करना चाहते तो कम से कम जो लोग इस समय 'नामदान' लेने के लिए आए हैं इन पर अपनी दया कर दें।''

उस समय महाराज जी बहुत सख्त हो गए। आपने मुझसे कहा, ''इनसे मेरे कपड़े मत फड़वाओ। तुम सिर्फ वह करो जो मैंने तुम्हें करने के लिए कहा है।''

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम

31 मार्च, 01 व 02 अप्रैल 2017

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम:

19, 20 व 21 मई 2017